

सक तो डे सक पिछे डे सक वारी घनि वास तो डे ॥ सव ॥ विधि ॥ प्रविहार की मोग रीति हा
डो दजे ॥

मंत्र डाढ को

डो न मो काम देस कमि रखा देवि नार व से इस्मायल जो गी इस्मायल जो गी वाली गाव निन
उठि चरवावन में जाय वन मे चरे सूको घमूड नागा यवे गोवर कीयो ज्यो मे नीप ज्यो की डा मात
सूत सूवाना पुछ पुछाला धडा पिला मुझ का डा दांत गाले मसूढा गाले मसुठे पिडा क
रें तो गुग्गु गोर स्वनाथ को दुहाइ फिरे ॥ सव ॥ विधि ॥ यामंत्र से लोह की कील ३ वा
मेची जे काठ मे टोक दीजे पीठा दुर होय ॥

मंत्र मिनाइ को

डो न मो तडुभ उतठ भड तेल करे दीजे वाती तेल वरे गलत सलनतू पाइ रोग मिनाइ रहै तो जती
हन मंत की दुहाइ फिरे ॥ सव ॥ विधि ॥ विभूत सो चांकि जे मिनाइ जाय ॥

मंत्र गडी को

डो न मो पश्चिम देस में अस्मायल हुवा जाहा अजे बाल खुदा याकूवा जाकूवा मे निकर्या
निरभेला हुवा वावर विरजि रो मिल मता डपाया हाथ पकड़ी रिडी को ल्याया मुकुरे गडी को
धूतेरी डाढ जिमो असमान सिले वांधू तीजे तेरा जो ला ल्या डवार ह को स मुकाम करा ड गा विधि
विचरे वावन विर जाय डरी समुद्र के तीर मेरा की या सब को इलाजे मेरा सिर पर मतो हनु मेत गा
जे किसी की चलाइ चले रही मेरा डका चारि खूत मे पाजे यमीधी की चलाइ नचले तो ह
कलाब असी हजार पीर पेडां वर लाजे ॥ सव ॥ विधि ॥ यामंत्र से गडी ती निप कडी से निनि

ओं नमो पश्चिम देस में अस्ताचल हुवा जाहा आजै बाल खुदा याकुवा जाकुवामे निकर्या
 निरभेलाहवा बावन विरजि दो मिलमता उपाया हाथपकड़ी रिडीको ल्यावा सुक्रेटीडी को
 धूनेरी डाढ जिमो असमान सिलेवांधू तीजे तेराजा ला ल्याउवारहकोस मुकाम कराड गाविधि
 विचरे बावन विरजाय डरीसमुद्र केतीर मेराकोयासव कोइ लाजे मेरा सिरपर मनी हुतमे तगा
 जे किसीकी चलाइ चले नही मेराडका चारिखू तमे पाजे यगिधीकी चलाइ नचले तोह
 कलाबअसी हजार पीरपैठावरलाजे ॥ सव्द ० ॥ विधि ॥ १ ॥ चलेटीतीनियकडो तेनिनि
 कोकनिष्टका कोलोहू दीजे एकस्वाम दोरीजे जहाटेकरो धर हांटीको पडाव होय ॥
 इति श्री इन्द्रजाले अथ तृतीय प्रथम भेद निख्य ते यदकनिष्ट भेद ॥

मंत्रदहरशाको

ओं नमो ओं हुमतवन्नकाकोठा जिसमें पिंडहारापेठा इश्वरकुं ची ब्रह्मा तालाड सघट पिंडका ज
 ती हुतमंतरखवाला ॥ सव्द ० ॥ विधि ॥ १ ॥ आढो दीजे वार ३ ॥

मंत्ररक्षाको

ओं नमो धरतिमाता धरतिपीता धरतिधरे रक्षार बाजे सींगी बाजे तरतरी आयागोरख रा ले
 नका पूतमंजू काइडालोहका कडाइ मारी पिठपीछे मनी हुतमंतरखडा ॥ सव्द ॥ विधि ॥ १ ॥ वार ७ ॥

मंत्रपुंगिवाधिवेको

ओं नमो वादीआया वादकांता कुं वै वावडपिपलकी द्याया रहरेवाव
 बांधू पुंगी अमृताद बांधू जोगी अमृताध बांधू के ठकि पुंगी अमृताधकी
 बाधे नरसिंह उपरी हुतमे नगाजे मेरी बांधी पुंगी बाजे तो गुग्गो रवनाचल

रीमंत्रजे पूंगी के दजे वंदे होय ॥

मंत्र ढाल रोपिवाको

ओं नमो चौसठ जोगीनी वावन विरह पक्ष में सतरपीर आय वेधा ढाल कति रहली हलै न चाली च
ले यादी बाद शत्रु से मीले यह ढाल हले चले तो जमर पीर की दुहाइ फिरे ॥ सव्द ॥ विधि ॥ ढाल को
मंत्रिके पेसा उपर मेलिजे ढाल हले चले नही ॥

मंत्र पेसारे पवाको

ओं नमो काली देवि किल कीला में चौसठ जोगीनी वावन विरह वाका थे सावत्र किला ठि मेरा की
ले न साथी न ले भै किल किले उपर हु मंत गाजे मेरा कीला पेसा चले तो गुगोर व नाथ लाजे
॥ सव्द ॥ विधि ॥ कांकरि मारिजे ३ बार मंत्र के ॥

मंत्र पेसा उठायवेको

ओं नमो हु मंत्र विरह वाहुला सा चले पेसा सुवां वीर वाते रावासा सब की दृष्टि बांधि दे मोही मेरा
मुख जो वे मव का पनाद करंता वादी रोवे भरी सन्ना में मोहि वी गोवे ॥ सव्द ॥ विधि ॥ धूर मंत्र के जे
सापर मारे ॥

मंत्र मुठिको

ओं नमो वीर तो हु मंत वीर सूर्य का तेज मंत्र की कासा अदी ठ चक्र देवी कालिका चलाया चले वादी न करवा
धने करि हो तेरा जीव को धात में न डंते राग पीर सुं मारुं तेने स्के तीर सो भरा मारा स्सा धू में जे से भुजंगा
की लहर पर तोहि गिरता माहुं धान फेरि चलो तो जति हु मंत का आन ॥ सव्द ॥ विधि ॥ उदुद मंत्रिके मारिजे
पक्षाई वाय ॥

मंत्र मुठको

सापरमारे ॥

मंत्रमूठिको

ओं नमो वीर तो हउ मंगवीर सूर्य का तेज मंत्र की काया अदीठ चक्र देवी कालिका चलाया चलने वादी न करवा
धने करि हो तेरा जीव को धात में न डरु तेरा गुहू पीर सुं मारु तेने स्वे तीर सो मंग मारा स्सा धू मे जे सै भुजंगी
की लहर परे तोहि गिरता माहू वान फेरि चलो तो गति हउ मंग की आन ॥ सव ॥ विधि ॥ उदुद मंत्रिके मारि जे
पछा डवाय ॥

मंत्रमुठको

ओं नमो वीर तो हउ मंग वीर भूरी मूठि चलावे तीर मे की रूप मगधितो डिलो हू सो रिव मेरा बेरी तेरा भगहि
या तो डिकले जा चरा सव धर्म की हाथ ईक ने धर्म की लालन में बलितु म्हा रे कदा गये माथे भूखाल डल वि
पछा डन पछा डे तो माता अंजनी की आन ॥ सव ॥ विधि ॥ काला उदुद की मूठि मंत्र हाथ में लीजे जोर
करि क्रोध करि शत्रु के दीजे माथ चले पाछे जाय परे ॥

मंत्रसापकीलपाको

ओं नमो सर्पारे नू भूलम भूल भूख वना तेरा कमल का फूल सर्पों वांधु तेरा भूवा दादी जिन तू गोद खिले था सर्पों
वांधु तेरा रतन करारा जामे तो कुं द्रध पिलाया वन की लनी बीज पाव मे रा की ल्या करे घावने गेरी डाड भस
म हो जाये ॥ सव ॥ विधि ॥ गेलिकीरे त सर्प के मंत्री डारि जे सर्प वध होय ॥

मंत्रसर्पकिलवाको

ओं नमो कील की भडुकी

भया अव मे तो हि सर्पों मो कप्यो फिरि चरि चरों चक ॥ सव ॥ वि

मंत्रचक्रद्विको

विउधर इन चडी सवा पहरी होइ हाथ प्रदालि पुरव धाउ अपनो जो चीतो

सोइ फल पाउ जगबंध भुजबंध भुजसमानबंध चारिलाड सिरसि दूरकट द्विसिद्धि देवावा नंडके पूतवे
 टाहोये सोइ लाग पास उठाय सोले आवै न जावे तल्पावै तोला जे गोरी जा माय पात्र वको इच्छर पाखति जा
 ने धरिवे ठी कट द्विसिद्धि जो आने इच्छर भारी चयका धाव रिद्धि डंगराप तो कराय ॥ सब ० ॥ विधि ॥ व
 ल भोज कर को सो सामग्री एक कोठा में धरवावे ताको अछुता कपरा लो ठकवावे ता सामग्री महिसोंचा
 रिलाड वधावे तथा आफवाधे तिनको कुवा में ले जाय ताको सगको रो कल समे प्रकला डधिर जे सो व हलाड कु
 वा में जाये ता कल सको का हिय कलाड वाहडी वहाई दया विधी डिलाड तो वाही ख हल्ले ड दोलाड भित
 राय दे अकल सजल से भर धर ले आवै सोय के कुना में धरि दे अकल ससा मगि मे से एक मनुष्य जी में उत
 र उंचोय कि दे सामग्री के ठीक वे ठीक वह मंत्र जपि वौ करै एक मनुष्य उल सामग्री माहि सो भरि २ देवा को
 सो को सामग्री होय तो पांच सो जी में तो भी दुटन ही वठति जाय सय इति मृद्वि को मंत्र ॥

मंत्र विरविधी को

डोन मो देव लोक दिवी व्या देवि नहां वेस इस्त्रायल जोगो दृष्य न भैरुं हउमं विर भूत प्रेत देव को मा
 रि भगावै परा इमाया ल्पावै लाडु पेडा वडा फि से वसीं हाडा पाक पतासा मित्री धेवर बालू साइ लोंग डो
 डा इला भी दाना तले देविकाली का उपर हउमं तंगाने स्ति वसु मे बाही वसु नल्पावै तो तनी सकोये
 देवता ला जे मिरची जा वचो जाय फल हरडे जंगी हरडे वा दाम छु हारा मुकरै राम विर तो ब तावै वस्त्राल
 क्षमरा वीर पुकस्स डा वै हाथ भूत प्रेत के चलावै हाथै हउमं न वीर को सब को उगावै सो को सांको वस्त्रा
 ल्पावै नल्पावै तो प्रकलार व अस्मी हजार पीर पैंग वर ल जावै ॥ सब ० ॥ विधि ॥ जाव वाहर आंधो कुं
 वा होय नहां जाय हनुमान जी की मूर्ति माडे मूर्ति के सत्र मख आपवै ठी धपवै वै दीवो जावै मंत्र

रिभगाव पराइमाया ल्यावे लाडु पडा वडा फिसवसी हाडा पाकपतासा मित्री घेवर बालूमाइ नोगडा
 डाइला चीदाना तले देविका लीका उपर हुमंत गाजे स्तिव सुमे बाही वसु न ल्यावे तोतती सको दो
 देवता लाजे मिस्त्री जावत्री जाय फल हरडे जंगी हरडे वादाम दुहार मुफरै राम विरतो बनावे वस्त्राल
 श्रमरा वीर पुकस्स डा वै हाथ भूत प्रेत के चलावे हाथे हुमंत वीर को सब को उगावे सोको सांको वस्त्रा
 ल्यावे न ल्यावे तोय कलारव अस्सी हजार पीर पैंग वर लजावे ॥ सव्द ० ॥ विधि ॥ जाववाहर आंधो कुं
 वा होय नहां जाय हनुमान जी की मूर्ति भाडे मूर्ति के सन मुख आपवे टी धूप घेवे दीवा जावे मंत्र
 पठे वार २१ सवा पाव को रोच छ तरवां उसहत हनुमान जी के भोग लगावे आचमन करवाय करि पि
 छे आप भोजन करने या विधि दीन २१ लोमंत्रे तव आकास बानी होय तव आप मंगे सोइ देस ही ॥

मंत्र तरवार कि धारवांधि वे को

ओ नमो धारधार अधरधार धारवाधो सातवार अनिवाधो तिनवार कटे रुसन भीजे चीरवां डा की धा
 र को गय जती हुमंत वीर ॥ सव्द ॥ विधि ॥ रत्ना की रे तले के तरवारी की धारि उपरी डारी जे वंधे ॥

मंत्र अगीया वे ताल को

ओ नमो आगीया विखे ताल पेठी सातमे पाताल लाव अग्निके शाल वैठि ब्रह्मा के कमल मछाले
 चील्ह कागली गुगल हरताल इन वस्त्राले चाली न ले चले तो माता का की आन ॥ सव्द ॥
 विधि ॥ चील कागली मछलिके मास की गुगल हरताल या धूप या की धूप घेवे मंत्र जपे
 वार २१ कां करी मंत्र के नारे वे तहां बलि डठे सही ॥

मंत्र पानी के उपर चलन को

उनिमोकालाभैरु कालिकाका पुत फगावडा डहाथ गुरज चलो मन प्रभा न आकत अग्रसु भरोने रामे
 तोमै जहाकरु पूजो दीनमान जो तुम मन चित्ता कार्य करी दे मोही कुमकुम कसूरी के सरि पूजा कर
 तुम्हारी भोर मन चित्तो भगवान् करहु गुरगोरव नाथ की चाचा फुरै ॥ सव्द ० ॥ विधि ॥ पुर्वीक
 में धौलो आकनौती ॥ रविवार पुजा करी जै सुक सोमवार पुजा करी जै पीछे जड उवाडी ल्याइ जै
 जड की पावडी कीरवूटा कराव जै पाव में पहिरि के दरवाव डपर चाली जै जानी पंगते नगे नही ॥

मंत्र स्त्री वसीकरणको

जै गुड गुडरे तु गुड गुं ता मडा मसानो केलि करे नाजा डस का देग उमा सव हरवे हमारी आस
 रव सम को देखे जले वले हम को देखे सकि रूचि ले चालि चालि रे काली का के पूत सोती होय न
 गाय ल्यावे वैठी होय उठाय ल्यावे न ल्यावे तो माना काली का को सेना पाव धरै ॥ सव्द ० ॥ विधि
 ॥ अर्कवार के दिन पेसा १ भर गुद ससान ले जाय जे तेल या कला लारिले जा जे में हूँ को पूजन करे
 स्थिकु गुड बुलाय जे वसि होइ ॥

मंत्र स्त्री वसीकरणको

उनिमोकालाभैरु काली रतिकाला आवा आधी रतिकाला रे तुम्हारा वीर परनारी सो रवे सीर द्वाती धर
 केवा कुं ल्यावे मूनि होय न गाय ल्यावे वैठी होय उठाय ल्यावे ॥ सव्द ० ॥ विधि ॥ हेली दीवाली की रानि
 लाल अरंड सुक डक में उपाडी लावे ता को काजल करे ग्राम मंत्र मंत्र जवार २१ को इस्त्री के लगवै सो
 आपनी भकी रहे ॥

मंत्र नजर बंधको

सिद्धकुण्डमुनीयजवास हाइ ॥

मंत्रग्रीवसीकरागको

ओं नमो कालाभैरु काली शक्तिकाला आया आधी शक्तिकाला रे तुम्हा रावीर परनारी से राखे सीर द्वाती धर
केवा कुं ल्पावे मूनि होय जगा मल्यावे वैठी होय उठा पल्यावे ॥ सव्द ॥ विधि ॥ होली दीवाली की राति
लाल अरंड रुकड़ रुकड़ का में उपाडौ लावे ताको काजल करे यामंत्र समंत्र जेवार २९ को इस्त्री के लगाना वेसा
आपनी भकी रहे ॥

मंत्रनजरबंधको

ओं नमो कालाभैरु भैरु घूघर वाला हाथ खडा फूलों की माला राजा परजा ध्यावे ताहि सव कि दुष्ट
वांछि दे मोहि मैं पूजो तुमको नि ति ध्याय राजा पर जा मेरी पावलगा य भरी अघाड मुमी रो तोहि तेरा को
या सव कु हाय देखू भैरु तेरे मंत्र की मक्ति यने मंत्र ईश्वर वाच ॥ सव्द ॥ विधि ॥ अर्कवार के दिन चुक
ठी रुक राख कि मसान माहि से ल्याय जेवार २९ मंत्र जे भैरु का पूजन करि जे विधि संयुक्त प्रसन्न करि कै ता
उपरांत भरी सभा में चुकटी फूकटे उडा यजे नजर बंध होय काज करे सो दीखे ही ॥

मंत्रचोरिकाठावाको

ओं नमो सतरसे परचोसा तेनी नीवान सतरसे भैरु ते २६ से तत्र चोदह समंत्र अठार
हसे परवत सतरसे पहाडी नीलाने वैसे नात्ता हुं मंत्र जनि गार खवाला कांसी की करी शि अंग
ई गिरी नारि परवत से चलाइ अठार हमार बना सपती चले लीना
हारी चाक ज्यो पिरै कहा कहा जा बचो रे के जाय चिं डाल के जाय क